प्र० शूद्रक की नाट्यकला का विश्लेषण कीजिए।

उ० →
भूमिका → महाकवि शूद्रक की एक ही कृति प्राप्त होती 'मृच्छकटिकम्'। मृच्छकटिकम् रूपक के दश अङ्गों में से 'प्रकरण' नामक अङ्ग है। मृच्छकटिकम् प्रकरण के लक्षण की कसौटी पर खरा उतरता है, यथा प्रकरणलक्षण -

'भवेत्प्रकरणे वृत्तं लौकिकं कविकल्पितम्।
शृङ्गारोऽङ्गी नायकस्तु विप्रोऽमात्योऽथवा वणिक्॥
नायिका कुलजा क्वापि वेश्या क्वापि द्वयं क्वचित्।'

इस प्रकार से देखें तो यह तृतीय प्रकार का प्रकरण ग्रन्थ है, क्योंकि इसमें वेश्या व कुलजा दोनों नायिका है। मृच्छकटिक में समाज का यथार्थ चित्रण किया गया है। इसलिए पाश्चात्य विद्वान् डॉ कीथ लिखते हैं - "इस रूपक के गुण इतने पर्याप्त हैं, कि यह भारतीय विचारधारा व जीवन से ओत-प्रोत है। नाट्यकला की दृष्टि से इस रूपक का पर्यालोचन हम इस प्रकार कर सकते हैं।

1) कथावस्तु / कथानक → मृच्छकटिक की कथावस्तु लक्षणानुसार काल्पनिक है। इसमें दो प्रेम कथाएं साथ-साथ चलती है। जिसमें चारुदत्त - वसन्तसेना की प्रणयकथा प्रमुख व गौण शर्विलक - मदनिका की प्रणय कथा ~~काल्पनिक~~ है। ~~इस~~ प्रमुख कथा में प्रणय सम्बन्ध में हमें प्रकृति - विपर्यय देखने को मिलता है - इस कथा में सामान्य के विपरीत नायिका नायक पर अधिक अनुरक्त है व मिलने के सब प्रयास भी नायिका ही करती है।

इसमें एक राजनीतिक कथा है, जिसमें एक साधारण ग्वालपुत्र आर्यक ही राजा को मारकर

Scanned with CamScanner

स्वयं राजा बन जाता है। मृच्छकटिक की कथा आदर्शवादी न होकर यथार्थवादी है। (53)

(2) पात्र → पात्रों की दृष्टि से इस रूपक मे अधिसंख्यक पात्र मध्यमवर्गीय है इसी कारण समाज के मध्यमवर्ग की स्थिति का चित्रण इस नाटक मे है। इस रूपक में सभी पात्र सार्वभौमिक भूमिका का निर्वहण करते हैं। इन पात्रों को किसी भी देश काल परिस्थिति में रखकर हम विचार करें तो हमें लगता है कि ये पात्र सर्वत्र उपयुक्त है जैसे शकार को आजकल की स्थिति में रखें तो देखते हैं कि राजनेताओं के सम्बन्धी भी अयोग्य होते हुए भी गुणी सज्जन व्यक्तियों को राजभय से परेशान करते हैं। इस प्रकरण मे सह नायक शर्विलक और प्रतिनायक शकार है।

(3) ~~शैली~~ रीति → इस नाटक में भाषामें प्रवाहिकता है। इसकी भाषा ~~में~~ सरल व सरस है। इसलिए इसमें वैदर्भी रीति है। लक्षण जैसे-

माधुर्यव्यञ्जकैर्वर्णै रचना ललितात्मिका।
आवृत्तिरल्पवृत्तिर्वा वैदर्भी रीतिरिष्यते॥

यथा → यासां बलिः सपदि मद्गृहदेहलीनां
हंसैश्च सारसगणैश्च विलुप्तपूर्वः।
तास्वेव सम्प्रति विरूढतृणाङ्कुरासु,
बीजाञ्जलिः पतति कीटमुखावलीढः॥

(4) ~~बीज~~ → रस → प्रकरण के लक्षणानुसार इसमें शृङ्गार ~~रस~~ आङ्गी है। उदा० → जब बसन्त सेना दुर्दिन में चारुदत्त के घर आती है और मेघ गर्जन से भयभीत होकर चारुदत्त से आलिङ्गन बद्ध हो जाती है तो चारुदत्त कहता है —

धन्यानि तेषां खलु जीवितानि ये कामिनीनां गृहमागतानाम्।
आर्द्राणि मेघोदकशीतलानि गात्राणि गात्रेषु परिष्वजन्ति॥"

Scanned with CamScanner

(5) प्रकृति चित्रण → सामान्य दृष्टि से इस प्रकरण के सभी अङ्कों में प्रकृति चित्रण है किन्तु पञ्चम अङ्क में दुर्दिन वर्णन में बहुत अधिक मनोहारि प्रकृति-चित्रण की छटा देखने को मिलती है जैसे → (54)

पवन चपल वेगः स्थूलधारा शरौघः
स्तनित-पटह-नादः स्पष्टविद्युत्पताकः।
हरति करसमूहं खे शशाङ्कस्य मेघो
नृप इव पुरमध्ये मन्दवीर्यस्य शत्रोः॥

(6) छन्दोलंकार योजना → हमें मृच्छकटिक प्रकरण में सभी प्रमुख छन्दों की योजना देखने को मिलती है। जैसे — उपजाति मालिनी शार्दूलविक्रीडितम् वसन्ततिलका, वंशस्थ आदि। किन्तु प्रमुखतया उपजाति, शार्दूलविक्रीडित व वसन्ततिलका छन्दों का प्रयोग है। अलंकारों के बिना काव्य निर्भूषिता नारी के समान अश्लाघनीय है अतः इस काव्य में भी कवि ने प्रायः सभी अलंकारों को स्थान दिया है पुनः प्रमुखतया उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, यमकादि की छटा देखने को मिलती है। उदा०-

(7) भाषा प्रयोग → भाषा प्रयोग की दृष्टि से नाटकों में प्रथम स्थान पर मृच्छकटिक अवस्थित है। इस प्रकरण मे संस्कृत के साथ-२ शौरसेनी, मागधी, प्राच्या, ढक्की, शकारी, चाण्डाली, अवन्तिका इन सात प्रकार की प्राकृतों का प्रयोग हमें दृष्टिगोचर होता है।

(8) कथोपकथन (संवाद-योजना) →

मृच्छकटिक की संवाद योजना बहुत सुन्दर है। यद्यपि कहीं-कहीं लम्बे व क्लिष्ट संवाद है जैसे विदूषक द्वारा वसन्तसेना का प्रासाद वर्णन पुनरपि इसके संवाद सजीव लघु और स्वाभाविक हैं। इनमें हास्य और व्यंग्य के पुट स्पष्टतया देखने को मिलते हैं जैसे शकार और

Scanned with CamScanner

(a) उद्देश्य → इस प्रकरण को लिखने का कृति का क्या उद्देश्य रहा होगा। इस विषय पर विचार करें तो उस समय की सामाजिक अवस्था का वर्णन ही प्रमुख उद्देश्य प्रतीत होता है। कैसे समाज में ब्राह्मण भी सार्थवाह हो सकता था और वह भी वेश्यागमन से नहीं बचता है, तो दूसरी ओर एक ब्राह्मण प्रिया को पाने के लिए चोरी करने में भी नहीं हिचकता। तथा एक अयोग्य राजश्याल न्यायधीशों से भी अन्याय कराने पर आतुर है तो दूसरी ओर एक नीचकुलोत्पन्न आर्यक दुष्ट राजा को मारकर राजा बनता है।

(b) निष्कर्ष → ~~दोषों~~ संक्षेप में मृच्छकटिक संस्कृत-साहित्य का एक अनूठा रूपक है। यद्यपि आलोचकों ने इसके विविध-दोषों का विस्तारपूर्वक उद्घाटन किया है। तथापि इसकी कुछ विशेषताएं हैं। जिनके कारण यह अत्यन्त लोकप्रिय बन गया है। कथानक की विभिन्नता, चरित्रों की बहुलता, घटना-चक्र का गतिमान होना, सामाजिक और राजनीतिक क्रांति और उच्चकोटि का हास्य मृच्छकटिक को प्रकरणों में महत्त्व प्रदान कराता है।

Scanned with CamScanner